IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनजातीय चेतना में आकाशवाणी की भूमिका

राम सिंह सौराष्ट्रीय (शोधार्थी)

हिन्दी अध्ययनशाला,

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

सारांश :–

आविर्भावकाल से ही आकाशवाणी की देश के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के साथ–साथ आमजन तक चेतना का संदेश प्रेषित करने में अहम भूमिका रही है। विशेष रूप से दूर–दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों के विकास में रेडियो अपने प्रसारित कार्यक्रमों के माध्यम से अलख जगाने का कार्य करता है। जनजातीय समुदाय में चेतना का संचार करने में आकाशवाणी का अप्रतीम योगदान रहा है। देश के अन्तिम छोर पर निवास करने वाले व्यक्ति तक पहुँचने का सबल माध्यम रेडियो है। गरीबी उन्मूलन, पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा, समानता आदि कई कार्यक्रम है जिनका प्रसारण विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों से होता है, जिनमें खेती किसानी, आकाशवाणी गाँव में, आदिवासी अखाड़ा, आदिस्वर प्रमुख है। सीजीवेट ने स्वयं द्वारा स्थान एवं समुदाय विशेष की भाषा में नाटकों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। जनजातीय क्षेत्र विगत कई दशकों से विकास की गति से अछूते हैं। सुदूर ऐसे कई क्षेत्र है जहाँ आज भी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। वास्तविकता यह है कि विकास की दौड़ में ये क्षेत्र आज भी पिछड़े हुए है।

बीज शब्द–जनजाति, आकाशवाणी, रेडियों, चेतना, आदिवासी।

प्रस्तावना :–

प्राचीनकाल से लेकर आज तब जनजातियों ने अपनी संस्कृति परम्पराओं, रीतियों को बहुत अच्छे से संजोकर रखा है, किन्तु आज आवश्यकता है तो उनके बहुमूखी विकास की। आज हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं फिर भी वहीं कुछ स्थान ऐसे है जहाँ आज भी ज्ञान रूपी रोशनी नहीं पहुँची है।हमारा देश विविधताओं वाला देश है। यहाँ विभिन्न वर्ग एवं जातियों के लोग निवास करते हैं। इनमें जनजाति वर्ग भी सम्मिलित है जो हमारे देश की जनसंख्या का बहुत बड़ा हिस्सा है। जनजाति वर्ग के

लिए 'आदिवासी' शब्द काप्रयोग किया जाता है। यह दो शब्दों आदि और वासी से मिलकर बना है जिसका अर्थ है मूल निवासी। पुरातनलेखों में आदिवासियों को 'अत्विका' और 'वनवासी' भी कहा गया है। देशज, मूलनिवासी, जनजाति, गिरिजन आदि भी जनजाति के पर्याय है।

सदियों से पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले इन लोगों की अपनी संस्कृति, भाषा, वेशभूषा, परम्पराएँ, रीति–रिवाज है। इनकी अपनी धार्मिक परम्पराएँ हैं, जिनका ये आज भी पूर्ण आस्था एवं विश्वास के साथ निर्वहन करते हैं। इसका ज्वलंत उदाहरण पचमढ़ी के पहाड़ी इलाकों में रहने वाले आदिवासी है, जिन्हें मैंने हाल ही में प्रत्यक्ष रूप से देखा है। सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान में स्थित काजरीग्राम एवं रोरीघाट ग्राम कौरकू आदिवासी जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है। एक साथ समूह में रहना इनकी एकता एवं समानता को दर्शाता है। वंदना टेटे एक भारतीय आदिवासी लेखिका है। वह कहती है कि ''आदिवासियों की दृष्टि समतामूलक है और उनके समुदायों में व्यक्ति केन्द्रित और शक्ति संरचना के किसी भी रूप का कोई स्थान नहीं है।''[1]

अतः स्पष्ट है कि आदिवासी समाज व्यक्ति को महत्व न देते हुए समाज के लिए समानता को सर्वोपरि मानता है। आगे वह कहती है कि ''उनका साहित्य भी विभाजित नहीं है वह एक ही है। वे अपने साहित्य को ऑरेचर अर्थात् ओरल लिटरेचर कहती है।''[2]

देश के कई क्षेत्रों यथा छिन्दवाड़ा, झाबुआ, बस्तर, जगदलपुर, झारखण्ड आदि जहाँ पर अधिक संख्या में जनजातियाँ निवास करती है। पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले यह आदिवासी आज भी समाज की विकासधारा से परे है। करीब तीन हजार की संख्या में विभिन्न जनजातियाँ भारत में निवास करती है। दूर–दराज एवं पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करने वाले इन लोगों को विकास की धारा से जोड़ना एक भगीरथ प्रयास है। विकास की मुख्यधारा से जनजातियों को जोड़ने में आकाशवाणी की अहम् भूमिका रही है। आज के तकनीकी युग में संचार के कई माध्यम है, जिनमें रेडियो सबसे महत्त्वपूर्ण सशक्त एवं सबल संचार माध्यम है। समाचार पत्र, टेलीविजन, पत्रिका, प्रिंट मीडिया आदि के लिए कुछ प्राथमिक सुविधाओं की आवश्यकता होती है। समाचार पत्र, पत्रिका आदि को पढ़ने के लिए इसकी उपलब्धता और लोगों का शिक्षित होना आवश्यक है। हमारे देश में आज भी कई आदिवासी क्षेत्र ऐसे हैं, जहाँ बिजली, शिक्षा, डाकसेवा आदि की उपलब्धता नहीं के बराबर है। अतः जनजातीय चेतना के लिए आकाशवाणी ही सबसे अच्छा माध्यम है। स्वर्णताभ कुमार ने लिखा है कि ''आकाशवाणी और दूरदर्शन की भूमिका अन्य के मुकाबले कुछ अलग है। पिछले दशकों में दूरदर्शन का तेजी से प्रसार हुआ है, फिर जितना व्यापक क्षेत्र आकाशवाणी का है उतना किसी माध्यम का नहींहै। आकाशवाणी ने व्यापक स्तर पर सामाजिक और आर्थिक दिशा में योगदान दिया है जिसमें आदिवासी मुद्दों से जुड़े कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते रहे हैं और इस समाज की समस्याओं को भी उठाया गया।''[3]

जनजातीय चेतना के लिए आकाशवाणी प्रसारित कार्यक्रम :–

सूचना तथा मनोरंजन की दृष्टि से आकाशवाणी एक सशक्त माध्यम है। आकाशवाणी के प्रसारण

केन्द्रों ने हमारी भारतीय संस्कृति व अन्य क्षेत्रीय संस्कृति को सहेजने एवं संजोने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। सभी प्रसारण केन्द्रों से जनचेतना सम्बन्धी कार्यक्रमों का प्रसारण लगातार किया जा रहा है। इनमें गरीबी उन्मूलन, पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा, समानता, परिवार नियोजन आदि प्रमुख है। हमारे आकाशवाणी केन्द्र इन्दौर से किसानों के लिए विशेष कार्यक्रम 'खेती किसानी' का नित्य प्रसारण किया जाता है। इसके अलावा आकाशवाणी के सासाराम केन्द्र से आदिवासी जनचेतना के लिए 'आकाशवाणी गाँव में' नामक कार्यक्रम का आयोजन करवाया गया। यह कार्यक्रम जिसका नाम 'आकाशवाणी गाँव में' है, आदिवासी समस्या को लेकर बनाया गया है, जिसमें कृषिसम्बन्धित, पेयजल, स्वास्थ्य आदि से जुड़ी समस्याओं को उठाया गया और गाँव के लोगों से इस पर बातचीत की गई। इसका असर यह हुआ कि लोगों ने अपनी आवाज सुनने के लिए रेडियो खरीदा। आकाशवाणी पर आने वाले कार्यक्रमों को सुनना प्रारम्भ किया।''[4]

वहीं आकाशवाणी राँची से आदिवासियों की भाषा में 'आदिवासी अखाड़ा' नामक कार्यक्रम भी लगातार प्रसारित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम की विशेषता यह है कि यह सप्ताह में पाँच दिनों में पाँच अलग–अलग भाषाओं में प्रसारित किया जाता है। दक्षिण बस्तर में अलग से आकाशवाणी केन्द्र संचालित करने की माँग भी वहाँ के लोगों द्वारा की गई है। 22 जनवरी 1977 को जगदलपुर में आकाशवाणी केन्द्र की स्थापना की गई थी। हिन्दुस्तान समाचार के सुधीर जैन के अनुसार ''इस केन्द्र की स्थापना के 25 से भी ज्यादा वर्षों तक बस्तर अंचल के तमाम लोक कलाकारों ने भी अपनी उपस्थिति दी, जिसमें जमावड़ा के देवराम सोढ़ी, जोगाराम के अलावा कई कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए गोंडी, धुर्वी व दोरली गीत रिकॉर्ड किये गए, वही गीत आज भी प्रसारित किए जाते हैं।''[5]

जनजाति के इन कलाकारों की प्रस्तुतियों को आज भी आकाशवाणी केन्द्रों ने संजोकर रखा है। जनजाति जनचेतना को ध्यान में रखते हुए आकाशवाणी राजस्थान के चित्तौड़गढ़ केन्द्र द्वारा सेंथी के कृषि विज्ञान केन्द्र में ''रेडियो किसान दिवस समारोह'' का आयोजन किया, जिसके माध्यम से किसानों को खेती से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान बताए गए।

संगीत के क्षेत्र में आदिवासी लोगों की रुचि को बढ़ाने के लिए एवं प्रतिभा को खोजने के उद्देश्य से आकाशवाणी ;।सस प्दकपं त्ंकपवद्ध ने एक टैलेंट शो प्रारम्भ किया। इस शो को 'आदिस्वर' का नाम दिया गया। 'आदिस्वर' नामक इस कार्यक्रम में समस्त आदिवासी अपना ऑडियो क्लिपिंग या गाने की सीडी किसी भी आकाशवाणी केन्द्र पर भेज सकते हैं। उल्लेखनीय है कि आकाशवाणी ने 'आदिस्वर' कार्यक्रम के माध्यम से आदिवासियों को खुलामंच उपलब्ध कराया है।

आकाशवाणी का रायपुर केन्द्र लम्बे अर्से से आदिवासियों की कला, संस्कृति, लोकसंगीत एवं लोकगीतों को जन–जन तक पहुँचाने में समर्थ रहा है। छत्तीसगढ़ को राज्य का दर्जा मिलने के बाद यह केन्द्र और अधिक विकसित हुआ तथा सरकार की विकास योजनाओं की जानकारी आमजन तक पहुँचाने के साथ ही साथ सूचना, शिक्षा, मनोरंजन का एक बड़ा माध्यम है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमन्त्री डॉ. रमण सिंह ने कहा कि ''छत्तीसगढ़ की बहुत बड़ी आबादी आज भी दूरदराज गाँवों में रहती है जहाँ

आदिवासी भाषाओं में लोगों तक विकास योजनाओं की जानकारी पहुँचाने में रेडियो की बड़ी भूमिका हो सकती है।''[6]

बेतार की दुनिया का सरताज रेडियो आज भी आमजन के लिए उतना ही उपयोगी है, जितना नेहरू एवं सुभाष के सम्बोधन एवं सन्देश प्रसारण के समय था। आज हम भले ही इन्टरनेट एवं मोबाइल के युग में पदार्पण कर चुके हो, लेकिन हमारे देश में अबुझमाड़ ऐसा क्षेत्र है, जहाँ सिर्फ रेडियो की आवाज ही सुनाई देती है। सूचना क्रान्ति के इस युग में रेडियो आमजन की आवाज बना हुआ है। अबुझमाड़ के आदिवासी लोगों में रेडियो आज भी समृद्धि का प्रतीक है। दिव्या माण्डले के अनुसार ''अबुझमाड़ के बाहर भले ही डीटीएच, एलसीडी और प्लाज्मा टी.वी. समृद्धि के प्रतीक हों, लेकिन यहाँ तो वही समृद्ध है जिसके पास रेडियो है।''[7]आज जहाँ आर्थिक शक्ति को व्यक्ति की समृद्धि माना जाता है वहीं रेडियो को समृद्धि का प्रतीक मानना, रेडियो की उपयोगिता एवं उसकी महत्ता को दर्शाता है। सभी संचार माध्यम आमजन की सोच एवं समझ के आधार होते हैं। टेलीविजन, दृश्य एवं श्रव्य माध्यम है, जहाँ दर्शक व्यक्ति को देखता भी है, सुनता भी है, वहीं रेडियो सिर्फ श्रव्य माध्यम है। आकाशवाणी के प्रसारण माध्यम द्वारा विशाल जनसमुदाय को सूचनाओं के माध्यम से सचेत किया जाता है। इन माध्यमों से प्रेषित सन्देश सूचनाएँ समाज की दशा और दिशा तय करते हैं।

आदिवासी जनसमुदाय के बीच जाकर उनसे सीधे रूबरू होकर जागरूकता फैलाने का महत्त्वपूर्ण कार्य 'सीजीनेट स्वरा' संस्था द्वारा भी किया जा रहा है। 'सीजीनेट स्वरा' आदिवासी क्षेत्रों एवं हाट बाजार या जहाँ अधिक संख्या में आदिवासी जनसमुदाय एकत्रित होता है वहाँ जाकर आदिवासी भाषा में नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुतियों के माध्यम से जागरूकता लाने का प्रयास कर रही है। ''छत्तीसगढ़ में आदिवासी समुदाय के बीच काम करने वाली संस्था सीजीनेट स्वरा ने एक जनवरी से छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से जनपत्रकारिता जागरूकता यात्रा शुरू की।''[8]इसके अतिरिक्त जनजातीय लोगों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए सन् 2006 में सामुदायिक रेडियो की शुरूआत हुई। आज सम्पूर्ण देश में 200 से अधिक सामुदायिक रेडियो स्टेशनों का संचालन स्थानीय लोगों द्वारा किया जा रहा है। इस रेडियो ने जहाँ एक ओर आम आदमी को अपने विचार रखने के लिए स्वतन्त्र मंच उपलब्ध कराया तो वहीं दूसरी ओर दूर–दराज पहाड़ी इलाकों में रहने वाले जनजातीय समुदायों की आवाज को भी बुलन्द किया है। इसके माध्यम से स्थानीय लोगों की छोटी–छोटी समस्याओं का समाधान ही नहीं किया जाता है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि आदि से सम्बन्धित जानकारी स्थानीय भाषा में स्थानीय लोगों द्वारा प्रेषित की जाती है। मध्यप्रदेश में जनजातीय चेतना के उद्देश्य से श्योपुर, खण्डवा, अलीराजपुर सहित 12 स्थानों पर सामुदायिक रेडियो केन्द्र संचालित किए जा रहे हैं।

आकाशवाणी प्रसारित कार्यक्रम 'मन की बात' में प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी मासिक वार्ताओं के माध्यम से शिक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य और खेती–किसानी से सम्बन्धित ज्वलन्त समस्याओं को उठाया है। इसी तर्ज पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमन्त्रीने आदिवासियों में जनचेतना के उद्देश्य से 'रमन के

गोठ' कार्यक्रम की शुरूआत की। 'रमन के गोठ' मासिक वार्ता के माध्यम से छत्तीसगढ़ के दूर–दराज एवं पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करने वाले आदिवासियों का सीधे सरकार से संवाद स्थापित हो सका।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि रेडियो हमारी संस्कृति का संरक्षक एवं वाहक है। रेडियो एक श्रव्य माध्यम है और इसकी सहायता से विचारों का आदान–प्रदान आसानी से किया जा सकता है। जनजातीय चेतना, संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, रीति–रिवाज आदि के विकास में रेडियो की अहम् भूमिका रही है। आज अगर यदि अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विषय में विचार किया जाए तो पता चलता है कि जनजाति के पास अपनी संस्कृति, रीति–रिवाज, संस्कार, परम्पराएँ, वनसम्पदा सब कुछ सुरक्षित है। उन्होंने अपनी संस्कृति को आज भी मजबूती के साथ पकड़कर रखा है। उनका धार्मिक विश्वास भी अटूट है। अगर उनका लोकदेवता पत्थर है, तो वह उसे पूर्ण आस्था एवं विश्वास से मानते हैं, चाहे उसका स्वरूप कुछ भी हो। जनजातियों की अपनी आर्थिक परम्परा है जिसे उन्होंने आज तक भी संजोकर रखा है। इन सब के होने बाद भी उन्हें चेतना की मुख्यधारा में शामिल करना नितान्त आवश्यक है और यह कार्य आकाशवाणी ने किया। भारतीय संस्कृति में रेडियो हर पीढ़ी के लिए उसके जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहा है। रेडियो का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। आकाशवाणी के विदेश प्रसारण विभाग, विविध भारती एवं राष्ट्रीय प्रसारण सेवा के बतौर हिन्दी उद्घोषक रह चुके अरूण तिवारी ने लिखा है कि ''तकनीकी और भाषाई तौर पर आज जितनी विविधता और पहुँच आकाशवाणी की है उतनी सिर्फ भारत नहीं, पूरे एशिया के किसी जनसंचार माध्यम की नहीं है।''[9]जनजातीय चेतना एवं उनके उन्मुखीकरण के लिए आकाशवाणी ही सबसे अच्छा माध्यम है। आवश्यकता है तो रेडियो को एक नये रूप में पेश करने की।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि जनजातीय चेतना एवं विकास के लिए शासकीय स्तर पर जो प्रयास किए जा रहे हैं वह निश्चित रूप से पिछड़े एवं दूर अंचल में रहने वाली जनजातियों के लिए किसी चमत्कार से कम नहीं है। भाषाई परेशानी को दूर करने के लिए सन् 2006 में सामुदायिक रेडियो का गठन किया जो जनजातीय चेतना के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। निश्चित ही आकाशवाणी इस दिशा में अपनी सचेत भूमिका में है।

सन्दर्भ :–

1. www.wikipedia.org.
2. www. wikipedia.org
3. स्वर्णताभ कुमार – आदिवासी क्षेत्र की समस्याएँ और मीडिया/ newswriters.in
4. स्वर्णताभ कुमार, आदिवासी क्षेत्र की समस्याएँ और मीडिया, newswriters.in
5. सुधीर जैन, हिन्दुस्तान समाचार, 24 जून 2016, dailyhunt.in

6. डॉ. रमनसिंह, रेडियो श्रोता सम्मेलन, रायपुर दिनांक 21.08.2016 Navpradesh.com

7. दिव्या माण्डले, 'दिव्या की बात' दिनांक 28.07.2012, divyamanndle. wordpress.com

8. पुरुषोत्तम ठाकुर, बीबीसी हिन्दी 18 जनवरी 2015 bbc.com

9. अरूण तिवारी, 26.07.2016 pravakta.com